

क्या होता है जनरेशन गेप ?

जब मैं बीस बरस का था, तब मेरे कॉलेज के साथी लोग कहते थे कि ये बुद्धे लोग हमारी बात समझते ही नहीं है। हम जो चाहते हैं वो करने नहीं देते हैं। दूसरी ओर, जब बुजुर्गों से मिलता तो वे कहते कि जमाना बहुत बदल गया है। बहुत जनरेशन गेप हो गया है। आजकल के लड़के-लड़कियाँ हमारी तो कुछ सुनते ही नहीं हैं। क्या करें युवा पीढ़ी पर कलयुग का प्रभाव हो गया है।

बचपन में, मैं यह सोचता था कि हमारे माता-पिता और बुजुर्ग लोग, जो हमें बहुत प्यार करते हैं, वे हमसे इतने दुखी क्यों हैं? और हम बच्चे जो उनको बहुत प्यार करते हैं, उनको इतना दुःख क्यों देते हैं, गलती कहाँ पर है? पर उन दिनों, यह बात समझ में नहीं आती थी। आज जीवन के 65वें वर्ष में आकर, मैं फिर से देख रहा हूँ कि जनरेशन गैप बढ़ गया है। आज के युवक-युवतियाँ अर्थात् नई पीढ़ी अपने बुजुर्गों के प्रति वही भाव रखती है कि इन बुजुर्गों को सठियाने के अलावा कोई काम नहीं है। दूसरी ओर, मेरे हम उम्र के साथी लोग, यह रोना रोते हैं कि जमाना बदल गया है और युवा पीढ़ी हमारी परवाह नहीं करती है।

अपनी इन दोनों अवस्थाओं के अनुभवों को याद करके यह महसूस करता हूँ कि आखिर यह जनरेशन गेप है क्या? सच बहुत ही कड़वा होता है, पर सच को स्वीकार करने के बाद वही सत्य अमृत बन जाता है। 60 बरस की उम्र के बाद शरीर और मन दोनों थकने लग जाते हैं, युवाओं जैसा जोश नहीं रहता है, और शारीरिक तथा मानसिक क्षमता बहुत घट जाती है। हम युवाओं के बराबर दौड़ तो नहीं पाते हैं, उल्टे यंग जनरेशन जब दौड़ती है तो उसको दौड़ लगाने से मना करते हैं। बच्चों को कहते हैं कि दौड़ो मत, धीरे चलो। ठोकर लग जाएगी। गिर जाओगे। चोंट लग जाएगी।

इस तरह से हम अपने अनुभवों का बोझ युवा पीढ़ी पर डालकर उनकी उन्नति में, प्रगति में रोड़ा डालते हैं। होना तो यह चाहिए कि हम बुजुर्ग युवा पीढ़ी के साथ दौड़ लगावें और उनको और अधिक तेज दौड़ने के लिए प्रोत्साहन दें। यदि हम उनके बराबर नहीं दौड़ पाते हैं, तो अपनी दौड़ने की क्षमता बढ़ाकर उनके और हमारे बीच की दूरी को कम करने का प्रयत्न करें। पर ऐसा हम नहीं कर पाते हैं और बच्चों की उन्नति के रास्ते में स्पीड ब्रेकर बनने की कोशिश करते हैं। बस यही हमारा जनरेशन गैप है।

क्षण—प्रतिक्षण इस संसार में विकास हो रहा है। नई—नई खोजबीन हो रही है। नये—नये आविष्कार हो रहे हैं। पुरानी पीढ़ी को इन सब का फायदा बड़ी उम्र में आने पर हुआ, परन्तु नई पीढ़ी को इन सब का फायदा बहुत ही यंग एज में मिल गया। इस अन्तर को ही हम जनरेशन गैप के रूप में देखते हैं।

यदि जीवन में बुजुर्गों को सुखी होना है, तो उनको ही इस जनरेशन गैप को कम करने के लिए प्रत्यन्त करने होंगे। परन्तु यदि बुजुर्गों ने युवाओं के रास्ते में रोड़े अटकाये, तो उनको उतना सम्मान नहीं मिल पायेगा, जितना सम्मान बुजुर्ग होने के नाते, उनको मिलना चाहिए।

अब यह हमारे हाथ में है कि हम अपनी युवा पीढ़ी से आदर पाएँ या अपने गुजरे जमाने को याद करके रोते रहें। जीवन को सुखमय बनावें अथवा जनरेशन गैप बढ़ने दें और जीवन को दुःखी बनावें।